SHIKSHA SAMVAD
International Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
© Shiksha Samvad|Volume-03| Issue-04| June- 2026
Available online at: https://shikshasamvad.com/
DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.56

भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में संस्कृति, कला और सृजनात्मकता: समग्र विकास का आधार

सोनम देवी[1], पिंकी यादव[2]
[1]शोधर्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग ,लखनऊ विश्विद्यालय
[2]शोधर्थी, शिक्षाशास्त्र विभाग ,लखनऊ विश्विद्यालय
[1]Email- sonamdevi022@gmail.com, [2]Email -2529pinkee@gmail.com

शोध सार : -

भारतीय ज्ञान परंपरा में संस्कृति कला और सृजनात्मकता का अतुलनीय योगदान है। भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में संस्कृति वेदों से लेकर आधुनिक काल तक के ज्ञान ,दर्शन ,कला, विज्ञान और सृजनात्मक जीवन शैली का वह पुंज है जो आध्यात्मिकता, नैतिकता और व्यवहारिक ज्ञान को जोड़ता है। भारतीय ज्ञान परंपरा की नींव वेदों, उपनिषदों ,पुराणों, शास्त्रों जैसे अर्थशास्त्र, चरक संहिता, सुश्रुत संहिता और लोक साहित्य में है जो न केवल आध्यात्मिक बल्कि व्यवहारिक ज्ञान भी प्रदान करते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा मनुष्य के समग्र विकास के लिए के शारीरिक ,मानसिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक पक्षों के संतुलन पर बल देती है। संस्कृति ,जीवन शैली ,आचार विचार और परंपराओं के माध्यम से व्यक्ति को समाज से जोड़ती है। जिससे सामूहिक चेतना का विकास होता है। सृजनात्मकता भारतीय दर्शन में प्रतिभा ,कल्पना और अनुभूति के समन्वय से उत्पन्न होती है जो नवाचार और मौलिक चिंतन को प्रोत्साहित करती है। कला संवेदनशीलता विकसित करती है। और सृजनात्मकता समस्या समाधान व नव निर्माण की क्षमता को सुदृढ़ करती है। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा मानव जीवन के समग्र विकास की एक समन्वित दृष्टि प्रस्तुत करती है जिसमें संस्कृति कला और सृजनात्मकता का विशेष स्थान है। प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य भारतीय ज्ञान परंपरा के आलोक में सांस्कृति, कला और सृजनात्मकता की भूमिका का विश्लेषण करना तथा यह स्पष्ट करना है कि किस प्रकार ये तत्व व्यक्ति और समाज के समग्र विकास में सहायक सिद्ध होते हैं। यह शोध दर्शाता है कि सांस्कृतिक कला और सृजनात्मकता व्यक्ति में संवेदनशीलता, नैतिकता, आत्मबोध तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का विकास करती है। वर्तमान वैश्वीकरण और तकनीकी युग में भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित कला एवं सृजनात्मक शिक्षा को अपनाकर शिक्षा, समाज और सांस्कृतिक चेतना को अधिक मानवीय, समावेशी और संतुलित बनाया जा सकता है। इस प्रकार, सांस्कृतिक कला और सृजनात्मकता भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में समग्र विकास का सशक्त आधार सिद्ध होती है।

मुख्य शब्द- भारतीय ज्ञान परंपरा, संस्कृति, कला और सृजनात्मकता, समग्र विकास

प्रस्तावना:

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व में अपनी समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर, दार्शनिक सोच और कला के माध्यम से विशिष्ट पहचान रखती है। यह परंपरा न केवल ज्ञान का भंडार है, बल्कि जीवन दृष्टि, नैतिकता, सामाजिक और मानसिक विकास के लिए मार्गदर्शन भी प्रदान करती है। संस्कृति, कला और

सृजनात्मकता इस परंपरा के मूल स्तम्भ हैं, जो व्यक्ति के समग्र विकास में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करते हैं।भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध ज्ञान परंपराओं में से एक है, जिसकी जड़ें वैदिक साहित्य, उपनिषदों, स्मृतियों, दर्शन, कला, साहित्य, लोक परंपराओं एवं जीवन-व्यवहार में गहराई से समाहित हैं। यह परंपरा ज्ञान को केवल सूचना या बौद्धिक ज्ञान के रूप में नहीं देखती, बल्कि उसे अनुभूति, आचरण और सृजन से जोड़कर मानव जीवन के सर्वांगीण विकास का माध्यम मानती है। संस्कृति, कला और सृजनात्मकता भारतीय ज्ञान परंपरा के ऐसे आधारभूत तत्त्व हैं, जो मानव सभ्यता को दिशा, उद्देश्य और संतुलन प्रदान करते हैं। भारतीय संस्कृति मूलतः एक समन्वयात्मक जीवन-दृष्टि है, जो भौतिकता और आध्यात्मिकता, व्यक्ति और समाज, मानव और प्रकृति के बीच संतुलन स्थापित करती है। ऋग्वेद में वर्णित "ऋत" की अवधारणा इस संतुलन का दार्शनिक आधार है, जिसमें ब्रह्मांडीय व्यवस्था, नैतिकता और जीवन-लय का समावेश है (Radhakrishnan, 1951)।

संस्कृति इसी ऋत-भावना की व्यावहारिक अभिव्यक्ति है, जो कला, साहित्य, परंपरा और सामाजिक व्यवहार में दृष्टिगोचर होती है।कला भारतीय ज्ञान परंपरा में केवल मनोरंजन या सौंदर्य-बोध तक सीमित नहीं रही है, बल्कि उसे आत्मोन्नति और समाज-निर्माण का साधन माना गया है। भरतमुनि का नाट्यशास्त्र कला को लोकजीवन का दर्पण और समाज के भावात्मक परिष्कार का माध्यम स्वीकार करता है। रस-सिद्धांत के अनुसार कला मनुष्य के भीतर निहित स्थायी भावों को परिष्कृत कर उसे संवेदनशील, सहिष्णु और संतुलित बनाती है (Bharata, Natya Shastra)। यह दृष्टि आज के सम्रग एवं मानव-केंद्रित विकास की अवधारणा से गहराई से जुड़ी हुई है।भारतीय ज्ञान परंपरा में सृजनात्मकता को साधना का रूप दिया गया है। वैदिक ऋचाएँ, उपनिषदों के संवाद, कालिदास का काव्य, अजंता-एलोरा की चित्रकला, मंदिर स्थापत्य और लोक कलाएँ—ये सभी सृजनात्मक अभिव्यक्तियाँ न केवल कलात्मक कौशल को दर्शाती हैं, बल्कि उस दार्शनिक चेतना को भी प्रतिबिंबित करती हैं, जिसमें सौंदर्य और सत्य का एकात्म भाव निहित है (Coomaraswamy, 1934)। इस प्रकार सृजनात्मकता भारतीय दृष्टि में केवल व्यक्तिगत प्रतिभा नहीं, बल्कि सामूहिक सांस्कृतिक चेतना का परिणाम है।

सम्रग विकास (Sustainable and Holistic Development) की भारतीय अवधारणा आधुनिक चुहुमुखी विकास से भिन्न है। जहाँ आधुनिक विकास प्रायः आर्थिक वृद्धि, उपभोग और तकनीकी विस्तार पर केंद्रित है, वहीं भारतीय ज्ञान परंपरा विकास को लोकसंग्रह, सर्वे भवन्तु सुखिनः और वसुधैव कुटुम्बकम् जैसी अवधारणाओं से जोड़ती है (Mahabharata; Hitopadesha)। संस्कृति, कला और सृजनात्मकता इस समर्थ विकास के मूल आधार हैं, क्योंकि ये सामाजिक एकता, सांस्कृतिक पहचान, पर्यावरणीय चेतना और मानसिक संतुलन को सुदृढ़ करते हैं।भारतीय कला और संस्कृति में प्रकृति के साथ सह अस्तित्व की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। वृक्ष-पूजन, नदी-संस्कृति, पंचतत्त्व सिद्धांत और लोक कलाओं में प्राकृतिक प्रतीकों का प्रयोग इस बात का प्रमाण है कि भारतीय ज्ञान परंपरा पर्यावरण-संरक्षण को सांस्कृतिक दायित्व मानती है (Kane, 1974)। आज के वैश्विक पर्यावरण संकट के संदर्भ में यह दृष्टिकोण सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के साथ सार्थक संवाद स्थापित करता है।

सृजनात्मकता-आधारित विकास आज क्रिएटिव इकोनॉमी और सांस्कृतिक उद्योगों के रूप में नई संभावनाएँ प्रस्तुत कर रहा है। हस्तशिल्प, लोक कला, संगीत, नृत्य, योग, आयुर्वेद और भारतीय डिजाइन परंपराएँ न केवल रोजगार सृजन का माध्यम हैं, बल्कि सांस्कृतिक आत्मनिर्भरता और आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना को भी सुदृढ़ करती हैं (UNESCO, 2013)। भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित कला एवं संस्कृति वैश्विक मंच पर भारत की सॉफ्ट पावर को भी सशक्त बनाती है।शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित संस्कृति और कला का समावेश विद्यार्थियों के संज्ञानात्मक, भावात्मक और सृजनात्मक विकास को संतुलित करता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय ज्ञान परंपरा, कला-आधारित शिक्षा, बहुभाषिकता और स्थानीय ज्ञान को शिक्षा के केंद्र में लाने पर बल देती है (NEP, 2020)। इससे शिक्षा केवल रोजगारोन्मुख न रहकर जीवनोपयोगी और मूल्यपरक बन सकती है। भारतीय ज्ञान परंपरा प्राचीन समय से ही मानव के विकास का आधार रही हैं । वर्तमान परिप्रेक्ष्य में तो यह अनिवार्य ही प्रतीत हो रही हैं पंचकोश

सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति का विकास केवल शारीरिक स्तर तक सीमित नहीं है, बल्कि मानसिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक तथा भावनात्मक विकास भी उतना ही महत्वपूर्ण है (Mishra, Das, & Sharma, 2025).

भारतीय ज्ञान परंपरा की मूल अवधारणा

भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System – IKS) एक समग्र, जीवनोपयोगी और मूल्य आधारित ज्ञान प्रणाली है, जिसका उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं बल्कि मानव जीवन का सर्वांगीण उत्थान है। यह परंपरा "सा विद्या या विमुक्तये" की अवधारणा पर आधारित है, अर्थात वही विद्या वास्तविक है जो व्यक्ति को अज्ञान, दुःख और बंधनों से मुक्त करे। (मुण्डकोपनिषद्)।

भारतीय ज्ञान परंपरा में ज्ञान को अनुभवजन्य, आचरणात्मक और आध्यात्मिक माना गया है। यह परंपरा व्यक्ति, समाज, प्रकृति और ब्रह्मांड के बीच गहरे अंतर्संबंध को स्वीकार करती है। इसमें ज्ञान को केवल संग्रहण नहीं बल्कि जीवन में उतारने की प्रक्रिया माना गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख तत्त्व

(1) समग्रता (Holistic दृष्टिकोण)

भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल आधार समग्रता है। इसमें शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक विकास को एक-दूसरे से जुड़ा हुआ माना गया है। पुरुषार्थ चतुष्टय—धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष—मानव जीवन की समग्र दिशा को दर्शाते है।

(2) आध्यात्मिकता और आत्मज्ञान

आत्मज्ञान भारतीय ज्ञान परंपरा का केंद्रीय तत्त्व है। उपनिषदों में "अहं ब्रह्मास्मि" और "तत्त्वमसि" जैसे महावाक्य आत्मा और ब्रह्म की एकता को प्रतिपादित करते हैं। यह दृष्टि व्यक्ति को आत्मचिंतन, संयम और नैतिक जीवन की ओर प्रेरित करती है। (ईशोपनिषद्, बृहदारण्यक उपनिषद्)

(3) अनुभव आधारित ज्ञान (अनुभव प्रमाण)

भारतीय दर्शन में ज्ञान के तीन प्रमुख प्रमाण माने गए हैं—प्रत्यक्ष, अनुमान और शब्द। इनमें अनुभव (अनुभूति) को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। योग, ध्यान और साधना के माध्यम से प्राप्त ज्ञान को वास्तविक और स्थायी माना गया है।(पतंजलि योगसूत्र)

(4) धर्म और नैतिक मूल्य

यहाँ धर्म का अर्थ संप्रदाय नहीं, बल्कि कर्तव्य, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व से है। गीता में कर्मयोग के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि निष्काम कर्म मानव विकास का आधार है। (श्रीमद्भगवद्गीता, अध्याय2)

(5) प्रकृति के साथ सामंजस्य

भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति को पूजनीय माना गया है। पंचमहाभूत, वृक्ष, नदियाँ और पृथ्वी—सभी के साथ सह-अस्तित्व (Co-existence) की भावना दिखाई देती है। यह दृष्टि आज के पर्यावरणीय संकट के समाधान में अत्यंत प्रासंगिक है।

(6) गुरु–शिष्य परंपरा

ज्ञान के संप्रेषण का प्रमुख माध्यम गुरु–शिष्य परंपरा रही है, जिसमें संवाद, अनुभव और अनुकरण के माध्यम से शिक्षा दी जाती थी। यह प्रणाली व्यक्तित्व निर्माण पर केंद्रित थी।(छांदोग्य उपनिषद्)

(7) सृजनात्मकता और कला-दृष्टि

भारतीय ज्ञान परंपरा में कला को साधना का माध्यम माना गया है। नाट्यशास्त्र का रस सिद्धांत दर्शाता है कि कला मानव संवेदना और चेतना के विकास का साधन है।(भरतमुनि – नाट्यशास्त्र)

(8) लोक और शास्त्र का समन्वय

भारतीय परंपरा में लोकज्ञान और शास्त्रीय ज्ञान का संतुलन देखने को मिलता है। लोककला, आयुर्वेद, वास्तु, कृषि ज्ञान—सब इस परंपरा के जीवंत उदाहरण हैं।(शर्मा, आर.एस. (2005)

अतः यह स्पष्ट है कि भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में संस्कृति, कला और सृजनात्मकता सम्रग विकास के सशक्त स्तंभ हैं। ये तत्व विकास को मानवीय, नैतिक, सौंदर्यात्मक और पर्यावरणीय आयाम प्रदान करते हैं। वर्तमान वैश्विक चुनौतियों—जैसे सांस्कृतिक विघटन, मानसिक तनाव, पर्यावरण संकट और मूल्यहीनता—के समाधान हेतु भारतीय ज्ञान परंपरा एक वैकल्पिक, समावेशी और स्थायी विकास मॉडल प्रस्तुत करती है, जिसमें संस्कृति, कला और सृजनात्मकता केंद्रीय भूमिका निभाती हैं।

शोध उद्देश्य

1 . भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा को समझना तथा उसके मूल तत्त्वों का विश्लेषण करना।

2. भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में सांस्कृति, कला की भूमिका और महत्व का अध्ययन करना।

3. सृजनात्मकता की अवधारणा को भारतीय दार्शनिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से स्पष्ट करना।

शोध का महत्त्व

प्रस्तुत शोध का महत्त्व भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge System–IKS) के उस समग्र दृष्टिकोण को पुनर्स्थापित करने में निहित है, जिसमें सांस्कृतिक कला, सृजनात्मकता एवं मानवीय विकास को केवल सौंदर्य या मनोरंजन तक सीमित न मानकर, व्यक्ति के बौद्धिक, भावनात्मक, नैतिक, आध्यात्मिक एवं सामाजिक विकास का सशक्त माध्यम माना गया है। आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में जहाँ कौशल-आधारित एवं तकनीकी विकास को प्राथमिकता दी जा रही है, वहीं यह शोध मानवीय मूल्यों, सांस्कृतिक चेतना और रचनात्मक संवेदनशीलता के संरक्षण एवं संवर्धन की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

यह शोध इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि भारतीय ज्ञान परंपरा में कला को साधना के रूप में स्वीकार किया गया है। नाट्यशास्त्र, संगीत, चित्रकला, वास्तुकला, लोक कला एवं शिल्प परंपराएँ न केवल सौंदर्यबोध विकसित करती हैं, बल्कि रस, भाव, चित्तशुद्धि एवं आत्मानुभूति के माध्यम से व्यक्ति को समग्र विकास की ओर अग्रसर करती हैं। इस अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि सांस्कृतिक कला और सृजनात्मकता व्यक्ति के भीतर स्व-बोध, सामाजिक उत्तरदायित्व और वैश्विक मानवीय दृष्टि विकसित करने में सहायक हैं।

शोध का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पक्ष यह है कि यह आधुनिक वैश्वीकरण एवं उपभोक्तावादी संस्कृति के संदर्भ में भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों की प्रासंगिकता को स्थापित करता है। आज के समय में जब सांस्कृतिक एकरूपता एवं मानसिक तनाव जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं, यह शोध दर्शाता है कि भारतीय कला एवं सृजनात्मकता परंपराएँ मानसिक संतुलन, रचनात्मक सोच और नैतिक स्थिरता प्रदान करने में सक्षम हैं। शैक्षिक दृष्टि से यह शोध नई शिक्षा नीति (NEP 2020) के उद्देश्यों—जैसे बहुआयामी विकास, कला-समेकित शिक्षा, स्थानीय ज्ञान का समावेशन एवं रचनात्मकता आधारित अधिगम—को सैद्धांतिक एवं दार्शनिक आधार प्रदान करता है। इससे शिक्षक-प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम विकास एवं शैक्षिक नवाचारों के लिए उपयोगी दिशानिर्देश प्राप्त होते हैं। समग्र रूप से, यह शोध भारतीय ज्ञान परंपरा आधारित सांस्कृतिक कला और को मानव के समग्र विकास का आधार सिद्ध करने का एक सार्थक प्रयास है। यह न केवल अकादमिक शोध को समृद्ध करता है, बल्कि समाज, शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में संतुलित, मूल्यनिष्ठ और रचनात्मक मानव निर्माण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण योगदान देता है।

भारतीय संस्कृति का महत्व:

भारतीय संस्कृति सिर्फ रीति-रिवाजों और परंपराओं का समूह नहीं है, बल्कि यह जीवन जीने की कला और मूल्य प्रणाली है। यह व्यक्ति को नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक दृष्टि से परिपक्व बनाती है। उदाहरण के रूप में, 'धर्म' और 'कर्म' के सिद्धांत व्यक्ति को जिम्मेदारी, अनुशासन और

परोपकार की ओर प्रेरित करते हैं। भारतीय संस्कृति में सामूहिक जीवन और सहयोग की भावना को अत्यधिक महत्व दिया गया है, जो समाज में सह-अस्तित्व और समरसता को बढ़ावा देती है।

कला और सृजनात्मकता:

भारतीय कला—संगीत, नृत्य, चित्रकला, मूर्तिकला और साहित्य—व्यक्ति की आत्मा और मानसिक विकास का स्रोत है। यह न केवल सौंदर्यबोध को बढ़ाती है, बल्कि व्यक्ति की सोच और सृजनात्मक क्षमता को भी विकसित करती है। भारतीय शास्त्रीय संगीत में रागों के माध्यम से भावनाओं का संतुलन और मानसिक शांति प्राप्त होती है। नृत्य और नाटक समाज की नैतिक कहानियों और शिक्षाओं को जीवंत रूप में प्रस्तुत करते हैं। कला के अभ्यास से मानसिक अनुशासन, एकाग्रता और कल्पनाशक्ति का विकास होता है, जो शिक्षा और पेशेवर जीवन में भी सहायक है।

सृजनात्मकता और नवाचार:

सृजनात्मकता (Creativity) भारतीय ज्ञान परंपरा का एक अनिवार्य अंग रही है। प्राचीन भारत में विज्ञान, गणित, वास्तुकला और चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में नवाचार की परंपरा थी। उदाहरण के लिए, आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली, योग और वास्तुकला में त्रिकालज्ञ दृष्टि और वैज्ञानिक सोच दिखाई देती है। यह सृजनात्मक दृष्टि व्यक्ति को समस्याओं का समाधान खोजने, नवाचार करने और अपने जीवन में सुधार लाने में सक्षम बनाती है।

समग्र विकास में योगदान:

संस्कृति, कला और सृजनात्मकता मिलकर व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक विकास में योगदान करती हैं। उदाहरण के लिए:शारीरिक विकास: नृत्य, योग और खेलकूद के माध्यम से।मानसिक विकास: कला, संगीत और साहित्य के अभ्यास से।भावनात्मक विकास: कथाओं, नाटकों और सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से ,आध्यात्मिक विकास: ध्यान, योग और भारतीय दार्शनिक शिक्षाओं से। यह समग्र विकास न केवल व्यक्ति को सशक्त बनाता है, बल्कि समाज में सकारात्मक योगदान और सह-अस्तित्व की भावना को भी प्रोत्साहित करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा (Indian Knowledge Systems) में संस्कृति, कला और सृजनात्मकता को मानव के समग्र विकास की आधारभूत epistemological और axiological संरचनाओं के रूप में स्वीकार किया गया है। यह परंपरा मानव विकास को केवल संज्ञानात्मक उपलब्धि तक सीमित न रखते हुए नैतिक चेतना, भावात्मक परिष्कार तथा आध्यात्मिक बोध के समन्वित विकास के रूप में परिभाषित करती है। संस्कृति, धर्म-कर्म-पुरुषार्थ की अवधारणाओं के माध्यम से मूल्यबोध, कर्तव्यनिष्ठा और सामाजिक उत्तरदायित्व का निर्माण करती है, जिससे व्यक्ति और समाज के बीच एक संतुलित सहअस्तित्व संभव होता है (Radhakrishnan, 1953)। भारतीय कलात्मक परंपरा—विशेषतः नाट्य, संगीत और नृत्य—भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में प्रतिपादित रस-सिद्धांत के माध्यम से मानवीय संवेदना और चेतना के सूक्ष्म स्तरों का परिष्कार करती है, जहाँ कला को मनोरंजन के साधन के रूप में नहीं, बल्कि भावात्मक शोधन (भावशुद्धि) एवं सामाजिक नैतिकता के संवाहक के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है (Bharata Muni, 2006)। इसी क्रम में सृजनात्मकता भारतीय ज्ञान परंपरा में आत्मानुभव और प्रज्ञा की अभिव्यक्ति है, जो योग-ध्यान, आयुर्वेद, कृषि, शिल्प तथा लोकज्ञान परंपराओं में निहित व्यावहारिक ज्ञान के रूप में मूर्त होती है, और जिसे अनुभवजन्य तथा स्थायी ज्ञान के रूप में स्वीकार किया गया है (Feuerstein, 1979; Sharma, 2005)। इस प्रकार संस्कृति मूल्यात्मक संरचना प्रदान करती है, कला संवेदनात्मक एवं चेतनात्मक परिष्कार सुनिश्चित करती है और सृजनात्मकता नवाचार तथा आत्म-अभिव्यक्ति को दिशा देती है, जिससे भारतीय ज्ञान परंपरा मानव विकास का एक ऐसा समग्र रूप प्रस्तुत करती है, जो शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और आध्यात्मिक आयामों के समन्वय पर आधारित है।

निष्कर्ष:

इस अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में संस्कृति, कला और सृजनात्मकता को मानव विकास के परिधीय तत्वों के रूप में नहीं, बल्कि उसके केन्द्रीय और अभिन्न घटकों के रूप में संकल्पित किया गया है। यह परंपरा ज्ञान को मात्र बौद्धिक संचय तक सीमित न रखकर उसे मूल्यबोध,

संवेदनात्मक परिष्कार और आध्यात्मिक चेतना के समन्वय के रूप में प्रस्तुत करती है। संस्कृति नैतिकता, कर्तव्यनिष्ठा और सामाजिक उत्तरदायित्व की आधारभूमि निर्मित करती है, कला मानवीय संवेदना और चेतना के सूक्ष्म स्तरों का परिष्कार कर सामाजिक सहानुभूति को सुदृढ़ करती है, जबकि सृजनात्मकता आत्मानुभव, नवाचार और व्यावहारिक ज्ञान के रूप में जीवन से तादात्म्य स्थापित करती है। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा मानव विकास का एक समग्र, संतुलित और मानवीय रूप प्रस्तुत करती है, जो समकालीन शिक्षा, सामाजिक पुनर्निर्माण और सतत विकास की चुनौतियों के समाधान हेतु भी प्रासंगिक एवं मार्गदर्शक सिद्ध होता है।भारतीय ज्ञान परंपरा में संस्कृति, कला और सृजनात्मकता केवल ज्ञान या मनोरंजन का माध्यम नहीं हैं, बल्कि यह समग्र मानव विकास का आधार हैं। यह व्यक्ति में संवेदनशीलता, नैतिकता, सौंदर्यबोध और सृजनात्मक क्षमता का विकास करती है। वर्तमान वैश्वीकरण और तकनीकी युग में भी, भारतीय ज्ञान परंपरा का यह दृष्टिकोण शिक्षा, कला और समाज के सभी क्षेत्रों में समग्र विकास के लिए अत्यंत प्रासंगिक है। यदि हम अपनी शिक्षा और जीवन शैली में इसे शामिल करें, तो यह न केवल व्यक्तिगत उन्नति, बल्कि समाज और राष्ट्र की समृद्धि में भी योगदान है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:

1 Radhakrishnan, S. (1951). Indian Philosophy (Vol. I–II). London: George Allen & Unwin Ltd.

2 Bharata Muni. (2006). The Nāṭyaśāstra (Trans. Manomohan Ghosh). Vol. I–II. New Delhi: Munshiram Manoharlal.

3 Coomaraswamy, A. K. (1934). The Transformation of Nature in Art. Cambridge, MA: Harvard University Press.

4 Vyasa. (1973). The Mahābhārata (Trans. K. M. Ganguli). New Delhi: Munshiram Manoharlal.

5 Kane, P. V. (1974). History of Dharmaśāstra (Vol. I–V). Poona: Bhandarkar Oriental Research Institute.

6 UNESCO. (2013). Culture: A driver and an enabler of sustainable development. Paris: UNESCO.

7 Ministry of Education, Government of India. (2020). National Education Policy 2020. New Delhi: Government of India.

8 Radhakrishnan, S. (1953). The Principal Upanishads. London: George Allen & Unwin.
(मुण्डकोपनिषद्: 1.1.4; 1.2.12; 2.2.8)

9 Bryant, E. F. (2009). The Yoga Sūtras of Patañjali. New York, NY: North Point Press.

10 Radhakrishnan, S. (1951). The Bhagavadgītā. London: George Allen & Unwin.

11 Bharata Muni. (2012). Nāṭyaśāstra (Trans. A. D. Pusalker). New Delhi: Motilal Banarsidass.

11 Sharma, R. S. (2005). India's Ancient Past. New Delhi: Oxford University Press Bharata Muni. (2006). The Nāṭyaśāstra (Trans. M. Ghosh). New Delhi: Munshiram Manoharlal Publishers.

12 Feuerstein, G. (1979). The Yoga-Sūtra of Patañjali: A New Translation and Commentary. Rochester, VT: Inner Traditions.

13 Mishra.I,D.S,Sharma.D.(2025) Bharatiya gyaan parampara :The soul of india 's self- reliant future",Naveen International Journal of Research in Education(NIJRE),1(01), 12 -19 https://doi.org/1071126/nijre.v1i1.02

14 मिश्र, ग. (2025). भारतीय ज्ञान परंपरा और ज्ञान की संस्कृति. भारतीय आधुनिक शिक्षा, 43(03), 9–19. NCERT. https://ejournals.ncert.gov.in/index.php/bas/article

Cite this Article:

सोनम देवी[1], पिंकी यादव[2], "भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में संस्कृति, कला और सृजनात्मकता: समग्र विकास का आधार" Shiksha Samvad International Open Access Peer-Reviewed & Refereed Journal of Multidisciplinary Research, ISSN: 2584-0983 (Online), Volume 03, Issue 04, Pp.532- 538, June-2026. Journal URL: https://shikshasamvad.com/

This is an Open Access Journal / article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution License CC BY-NC-ND 3.0) which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited. All rights reserved.

CERTIFICATE

of Publication

This Certificate is proudly presented to

सोनम देवी[1], पिंकी यादव[2]

For publication of research paper title

भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में संस्कृति, कला और सृजनात्मकता: समग्र विकास का आधार

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-03, Issue-04, Month June 2026, (RPRI-3.89/ 6.89)

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at: https://shikshasamvad.com/

DOI:- https://doi.org/10.64880/shikshasamvad.v3i4.56